Mahila college Dalmianagar
Department of History
B.A III (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date – 05/02/2024

Q: — 1857 के विद्रोह की प्रकृति की विवेचना कीजिए।

=> 1857 के विद्रोह का प्रमुख राजनीतिक कारण ब्रिटिश सरकार की 'गोद निषेध प्रथा' था 'हड़प नीति' थी। 1857 की क्रांति के प्रकृति के संदर्भ में अलग-अलग विद्वानों द्वारा अलग-अलग मत प्रस्तुत किए गए तथा यह प्रश्न वर्तमान में भी विवाद योग्य है। क्योंकि इसके प्रकृति के संदर्भ में एक सामान्य राय स्वीकार नहीं किया गया।

सामान्य रूप से इसे सैन्य विद्रोह, जनविद्रोह, धार्मिक विद्रोह, सभ्यता एवं बर्बरता के मध्य संघर्ष, श्वेत एवं अश्वेत के मध्य संघर्ष, हिन्दू-मुस्लिम षड्यंत्र, मुस्लिम षड्यंत्र, राष्ट्रीय विद्रोह तथा भारत का प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष इत्यादि के रूप में विश्लेषित किया गया है। मिलेसन, सीले, ट्रेवेलियन, लॉरेन्स, ईश्वरी प्रसाद इत्यादि इतिहासकारों का मानना है की यह विद्रोह एक सैन्य विद्रोह था क्योंकि सैन्य असंतोष के फलस्वरूप यह विद्रोह आरम्भ हुआ तथा असंतुष्ट सैनिकों द्वारा ही इस विद्रोह को संचालित किया गया।

कुछ अपवादों के अतिरिक्त इस विद्रोह में जनभागीदारी नहीं थी।

विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए मत निम्न हैं—

1). डफ, केन, नार्टन तथा जवाहर लाल नेहरू द्वारा इस विद्रोह को जन विद्रोह के रूप में विश्लेषित किया गया था। यह विद्रोह एक जन विद्रोह का रूप था।

2). रीस के अनुसार— यह विद्रोह एक धार्मिक विद्रोह था क्योंकि यह विद्रोह चर्बीदार कारतूस के प्रश्न पर आरम्भ हुआ, जो धार्मिक भावनाओं पर आधारित था।

1857 में भारत सरकार द्वारा विद्रोह की प्रकृति को विश्लेषित करने के लिए दो प्रसिद्ध इतिहासकार- रमेश चन्द्र मजुमदार एवं सुकुमार सेन को औपचारिक रूप से नियुक्त किया गया तथा आर. सी. मजुमदार के अनुसार यह विद्रोह न तो प्रथम, न ही राष्ट्रीय तथा नही स्वतंत्रता संघर्ष था तथा यह विद्रोह अनियोजित एवं स्वतःस्फूर्त था। 1857 के विद्रोह को आउट्रम एवं टेलर ने हिन्दू-मुस्लिम षड्यंत्र के रूप में तथा कूपलैंड द्वारा मुस्लिम षड्यंत्र के रूप मे विश्लेषित किया गया था जो यह इंगित करता है कि यह विद्रोह एक नियोजित विद्रोह था। गोरखपुर के जिला दस्तावेजों के अनुसार यह विद्रोह नियोजित था तथा मराठा एवं अवध के शासकों द्वारा इस विद्रोह के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की गई थी। लेकिन यह विद्रोह अलग-अलग स्थलों पर अलग-अलग तिथि में आरंभ हुआ तथा विद्रोह के दौरान विद्रोहियों के मध्य किसी प्रकार

Scanned with CamScanner

का कोई सम्पर्क सूत्र प्रथम नहीं रहा था। यद्यपि विद्रोह के दौरान विद्रोही नेताओं द्वारा एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश की गई लेकिन विद्रोह को एकीकृत करने का प्रयास असफल रहा। इस स्थिति में इस विद्रोह को असंयोजित विद्रोह ही स्वीकार किया जा सकता है।
1857 का विद्रोह प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि इस विद्रोह में विद्रोहियों द्वारा कोई वैकल्पिक व्यवस्था की योजना प्रस्तुत नहीं की गई थी। दिल्ली में बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट घोषित किया गया था तथा दिल्ली के शासक ने संचालन के लिए बख्त खाँ के नेतृत्व में एक 10 सदस्यी शासन परिषद गठित किया गया थे जिसमे 5 सैन्य प्रतिनिधि एवं 5 नागरिक प्रतिनिधि शामिल थे। प्रथम विद्रोह बंगाल प्रांत में 1772-73 में सन्यासी विद्रोह के रूप में किया गया था इस विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष कहा जा सकता है। इस आधार पर 1857 के पूर्व के सभी कृषक विद्रोह जनजातीय विद्रोह एवं नागरिक विद्रोह को स्वतंत्रता संघर्ष के श्रेणी में रखा जा सकता है। राष्ट्रीयता की संकल्पना एवं आधुनिक संकल्पना है, तथा यह संकल्पना 17 वीं शताब्दी में यूरोप में राष्ट्रीय राज्य के उदय से विकसित हुआ तथा एशियाई, अफ्रीकाई एवं लैटिन अमेरिकी देशों में यह भावना 20वीं सदी में प्रभावी हुई। विद्रोह के दौरान रानी लक्ष्मी बाई ने - "मैं झाँसी न दूँगी" का नारा बुलंद किया जो यह प्रमाणित करता है कि उनकी राष्ट्रीयता झाँसी तक सिमित थी।
1857 की क्रांति सैन्य विद्रोह के रूप में आरंभ हुआ, लेकिन कुछ क्षेत्रों में जन विद्रोह के रूप

में परिवर्तित हो गया। विद्रोह के मूल में राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान नहीं थी लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल में उसे राष्ट्रीयता के प्रेरक तत्व के रूप में स्वीकार कर लिया गया। यह क्रांति अभियोजित स्वतः स्फूर्त एवं अप्रगतिशील स्वरूप को प्रदर्शित करता था।

Scanned with CamScanner